International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 545-546

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(3): 545-546
www.allresearchjournal.com
Received: 08-01-2017
Accepted: 10-02-2017

डॉ. अमित शर्मा
सहायक प्रोफेसर (संस्कृत), यू.सी. डी.एल, सी.डी.एल.यू, सिरसा, हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ. अमित शर्मा
सहायक प्रोफेसर (संस्कृत), यू.सी. डी.एल, सी.डी.एल.यू, सिरसा, हरियाणा, भारत

पुराणों में पापकर्म विवेचना

डॉ. अमित शर्मा

प्रस्तावना

भारतवर्ष में प्राचीन वैदिककाल से ही धार्मिक साहित्य के अर्थ में 'पुराण' शब्द प्रचलन में रहा है। पुराणों के अन्तर्गत ज्ञान–विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि सभी विषयों को धर्म का अंग बनाकर क्रमबद्ध रूप से समाविष्ट किया गया है। पौराणिक साहित्य विकासशील रहा है जिसका अन्तिम सम्पादन व्यास द्वारा किया गया है। अथर्ववेद के अनुसार पुराणों का उद्भव ऋक्, साम, छन्द एवं यजुष् के साथ ही हुआ।[1] प्राचीन वैदिक आख्यानों का पृथक् रूप से किया गया साहित्यिक संकलन ही पुराण है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि पुराणों में जीवन उपयोगी समस्त प्रकार का ज्ञान–विज्ञान निहित है। पुराणों में मानव जीवन के जन्म, मृत्यु, पूर्वजन्म, अग्रिम जन्म आदि सभी अंशों का विस्तृत वर्णन किया गया है। पुराणों के अनुसार जीव की मृत्यु के पश्चात् उसके द्वारा अर्जित किया गया सम्पूर्ण ऐश्वर्य इस लोक में रह जाता है केवल पाप–पुण्य रूपी कर्मफल ही उसके साथ परलोक में जाते हैं। मनुष्य रूप में जीव के द्वारा दो ही प्रकार के कर्म किए जाते हैं पाप तथा पुण्य। पुराणों में अच्छे व बुरे कर्मों का ही पाप एवं पुण्य कर्म के रूप में विस्तृत वर्णन किया गया है। पाप एवं पुण्यकर्मों का फल जीव को परलोक में अवश्य भोगना पड़ता है।[2] बृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार पुण्यकर्म करने से जीव पुण्यवान् एवं पापकर्म करने से पापी कहलाता है।[3]

मनुष्य स्वयं को जिससे प्रयत्नपूर्वक बचाता है अथवा दुर्जनों द्वारा जो रक्षित होता है वही 'पाप' कहलाता है। ''पान्ति रक्षन्ति यस्मात् तत्पापम्'' अथवा ''पायते दुर्जनैरितिपापम्। पुराणों में 'पाप' के पर्याय रूप में अधर्म, अनर्थ, अत्याचार, अपराध, कुकर्म, पातक, अमंगल, असत्कर्म, आक्षेप, दोष, नरक आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। भविष्यपुराण के अनुसार शास्त्र सम्मत समस्त कर्मों के विपरीत कर्म ही 'पाप' कहलाते हैं।[4] जिस प्रकार न्यायविरुद्ध असद् आचरण का फल इस जीवलोक में मिलता है ठीक उसी प्रकार शास्त्रविरुद्ध किए गए कर्मों का फल जीव को परलोक में मिलता है। देवताओं की आराधना न करना, माता–पिता व गुरुजनों की सेवा न करना, कटु वचन बोलना, अपवित्र पदार्थों का भक्षण करना, परस्त्री गमन, चुगली करना आदि कृत्य पापकर्म की श्रेणी में आते हैं।[5] दरिद्र एवं वृद्ध जनों के प्रति विनम्रता न रखना एवं दुःखीजनों की सहायता न करने वाला मनुष्य पापात्मकवृत्ति वाला होता है।[6] मार्कण्डेयपुराण के अनुसार, गुरुजनों से द्रोह करना, विद्वानों का तिरस्कार करना एवं व्रतादि नियमों का पालन न करना आदि कृत्य पापकर्म को बल प्रदान करते हैं।[7] वैदिककर्मों के त्याग के कारण जीव पतित होकर पाप रूपी कीचड़ में फंस जाता है।[8] मनुस्मृति के अनुसार पापात्मक कर्मों के चेष्टा के आधार पर तीन भेद हैं। मन के द्वारा मानसिक, वाणी द्वारा वाचिक एवं शरीर द्वारा किया जाने वाला पापकर्म कायिक कहलाता है।[9] गुरुडपुराण के अनुसार भी मानसिक, वाचिक एवं कायिक रूप से पापकर्म तीन प्रकार के हैं।[10] अन्य सभी पुराणों में भी इन्हीं तीन प्रकार के पापकर्मों का वर्णन किया गया है। पूर्वोक्त मानसिक, वाचिक एवं कायिक पापकर्मों के पुनः चार–चार भेद हो जाते हैं।

मानसिक पाप

मानसिक रूप से चार प्रकार के पाप किये जा सकते हैं–[11]

1. अन्यजनों के धन प्राप्त करने की लालसा रखना।
2. परस्त्री की इच्छा करना।
3. किसी की बुराई सोचना।
4. अभिनिवेश।

वाचिक पाप

वाणी द्वारा किये जाने वाले पाप भी चार प्रकार के हैं—[12]

1. असंगत भाषण
2. अप्रिय भाषण
3. असत्य भाषण
4. चुगली करना

शारीरिक पाप

1. भक्षण न करने योग्य पदार्थों का भक्षण करना।
2. हिंसकप्रवृत्ति के द्वारा हिंसा करना।
3. ऐसा कार्य करना जिससे दूसरों को कोई दुख पहुँचे या उनके मन को ठेस पहुँचे।
4. पर द्रव्य को बलपूर्वक हरण कर लेना।[13]

हरिवंश पुराण के अन्तर्गत पापकर्मों को आठ भेदों में विभक्त किया गया है।[14]

1. ज्ञानावरणं
2. दर्शनावरण
3. वेदनीय
4. मोहनीय
5. आयु
6. नाम
7. गोत्र
8. अनन्त

नारदीयपुराण के अनुसार सुरापान, हत्या, शास्त्रनिन्दा, परनिन्दा, असत्यभाषण, परस्त्रीगमन आदि प्रकार से बहुविध पापकर्म हैं।[15] पद्मपुराण के अन्तर्गत चार वर्णों के लिए भिन्न–भिन्न चार प्रकार के पाप कर्म कहे गए हैं। निज–निज वर्ण के शास्त्रोक्तधर्म का पालन नहीं करने से मानव पापात्मा बन जाता है।[16] अतः वेद, पुराण एवं शास्त्रादि द्वारा वर्जित अपराधकर्म मनुष्य द्वारा मानसिक, वाचिक तथा कायिक रूप से ही किए जाते हैं।[17]

पुराणोक्त पापकर्मफल

गरुणपुराण के अनुसार मनुष्य द्वारा पूर्वजन्म में किए गए फलों को अगले जन्म में अवश्य भोगना पड़ता है।[18] पूर्वजन्म में अर्जित किए गए कर्मफलों को भोगने के पश्चात् ही शरीर की शुद्धि सम्भव है।[19] महाभारत के अनुसार प्राणी की मृत्यु के पश्चात् शरीर अग्नि में जलकर नष्ट हो जाता है तथा अर्जित सम्पत्ति उस मनुष्य के उत्तराधिकारियों को मिल जाती है। केवल पाप अथवा पुण्य ही उसके साथ रहता है।[20] पद्मपुराण में दृष्टान्त के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि जिस प्रकार एक गाय का बछड़ा सहस्रों गऊओं के बीच खड़ी अपनी माता गाय को पहचान लेता है ठीक उसी प्रकार अशुभ कर्मफल सहस्रों जन्मों के बाद असंख्य जीवात्माओं के मध्य में कर्मकर्त्ता को पहचान लेता है।[21] भतृहरि के अनुसार मनुष्य द्वारा किए गए पापकर्म का फल उसे अवश्य मिलता है और इस कर्मफल को किसी भी स्थिति में टाला नहीं जा सकता।[22] मनुष्य धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष रूपी पुरुषार्थचतुष्ट्य हेतु कर्म करते हुए लोभ की भावना से ग्रसित हो जाता है। यह लोभ की भावना ही उसे पाप कर्म की ओर प्रवृत्त कराती है।[23] श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार भ्रम की स्थिति में मनुष्य की ज्ञानशक्ति नष्ट हो जाती है और उसका अपनी वास्तविक स्थिति से पतन हो जाता है।[24] जिससे कि वह पापकर्म के पथ पर अग्रसर होता है। पद्मपुराण के अनुसार पापकर्म के फलस्वरूप क्लेश, वेदना, कष्ट, यातना इत्यादि परिणाम सामने आते हैं एवं पापकर्त्ता को पापकर्म के इन परिणामों को अवश्य भोगना पड़ता है।[25] ब्रह्मपुराण में पाप को ही नरक संज्ञा दी गई है।[26] अतः कहा जा सकता है कि पापकर्म के प्रभाव से मनुष्य का सात्विक भाव नष्ट हो जाता है, जिससे कि उसकी प्रवृत्ति तामसिक हो जाती है और वह शास्त्रोक्त एवं वेदोक्तकर्मों को न करता हुआ पथभ्रष्ट हो जाता है। जिसके परिणामस्वरूप वह दुःख प्राप्त करता है। पापकर्मजन्यफल के कारण मनुष्य का सामाजिक व्यवहार भी निम्नस्तरीय हो जाता है और वह अपनी सहनशीलता भी खो देता है।[27]

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय पौराणिक साहित्य में जीवात्मा को उसके द्वारा किये गये पापकर्मों के लिए नरक का भय दिखाकर शुभकर्म करने तथा अशुभकर्मों को त्यागने का सन्देश दिया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह। अथर्ववेद 11.7.24.
2. शुभाशुभं भुंजते च कर्मपूर्वार्जितं नरः।। देवीभागवतपुराण, 9. 29.17.,पद्मपुराण, 2.94.18.
3. पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति पापः पापेनेति। बृहदारण्यकोपनिषद्, 3.2.13.
4. भविष्यपुराण, 38.4.
5. वराहपुराण, 35.21—24.
6. पद्मपुराण, 2.96.18.
7. ब्रह्मवैव्रतपुराण, कृष्ण जन्म खण्ड, 4.20—28.
8. विष्णुपुराण, 6.5. 25—26.
9. मानसं मनसैवायमुपभोक्ते शुभाशुभम्।
   वाचा वाचाकृतं कर्म कायेनैव च कायिकम।। मनुस्मृति 2.8.
10. पातकं त्रिविधम्। गुरुडपुराण, 2.13.17.
11. शिवपुराण उमासंहिता, 5.3.
12. वही, 5.4।
13. वही, 5.5।
14. हरिवंशपुराण, 3.99।
15. पापमेवं बहुविधम्। नारदीयपुराण 14.36।
16. तेषां सव्यवहारश्च एभिर्कर्माभिरिष्यते।
    स्वर्गापवर्ग प्रीतिश्च पुण्यं पापं तथैव च।। वायुपुराण 35.21.
17. कर्मणा, मनसा, वाचा ये पापहयथोः जनाः।
    अपराधगृहास्ते तु विपरीतास्तु साधवः।। वराहपुराण 177.3.
18. पूर्वकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति। गुरुडपुराण, 2.31.1.
19. यमलोक पथे तानि तिष्ठन्त्येव समीपतः। गुरुडपुराण, 2.34.3.
20. द्वाभ्यामयं सह गच्छत्यमत्र पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमानः। महाभारत, उद्योगपर्व, 40.16.
21. यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
    तद्वद् शुभाशुभकर्म कर्तारमनुगच्छति।। पद्मपुराण, 2.94.19
22. नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति। नीतिशतकतम्, 95
23. लोभात् पापं प्रवर्तते। महाभारत, शान्तिपर्व, 158.2।
24. स्मृतिभ्रंषादबुद्धिनाशौ बुद्धिनाशत्प्रणष्यति, श्रीमद्भगवद्गीता, 2. 63।
25. दुष्कृतं भुन्जते पात्र पापयुक्तेन कर्मणा। पद्मपुराण, 2.94.4।
26. नरक स्वर्ग संज्ञे वै पापपुण्ये द्विजोत्तम। ब्रह्मपुराण, 22.44।
27. नीतिशतकम्, 52।